दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अप्रैल-2026

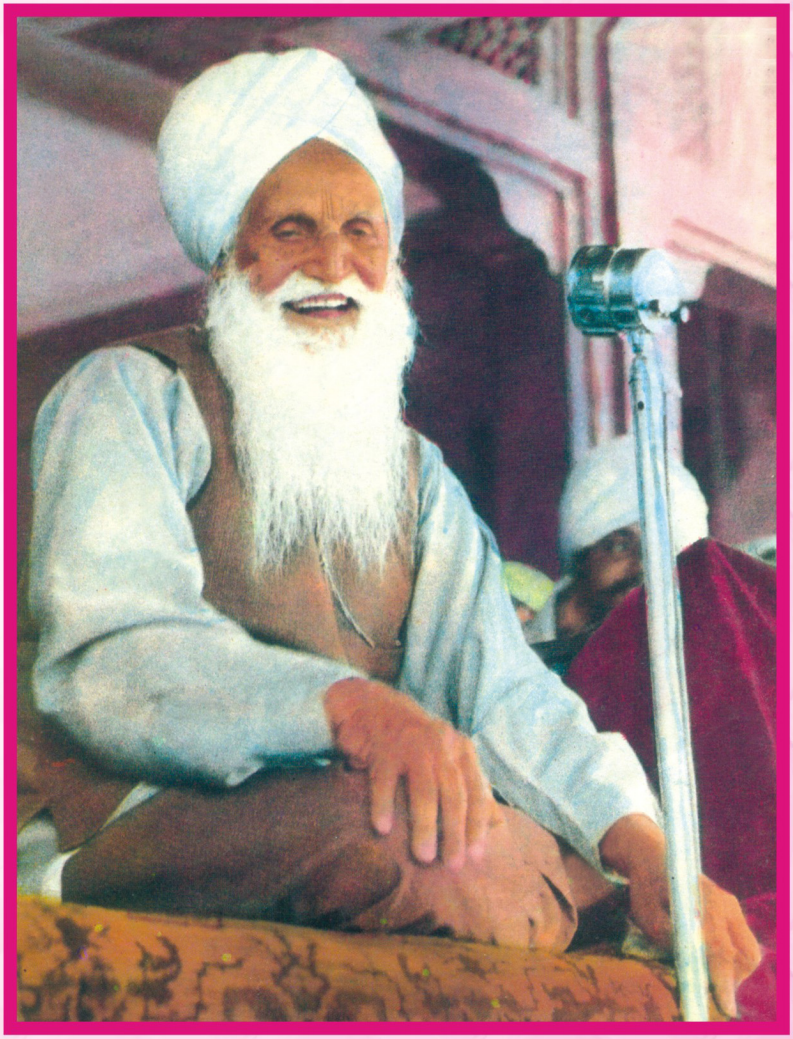

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां | अंक–बारहवां | अप्रेल–2026

2 सावन ते कृपाल दियां मेहरां ने (शब्द)

3 अनमोल वचन

11 हुजूर सावन सिंह जी महाराज की याद में

17 तवज्जो (सवाल–जवाब)

30 किड्स कॉर्नर–साहूकार के चार बेटे

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 289 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सावन ते कृपाल दियां मेहरां ने

सावन ते कृपाल दियां मेहरां ने, अज ऐह थान सुहाया ऐ,
नाम दा मींह अमृत वरसा के, सोहणा बाग सजाया ऐ,
आई मौज महापुरुषां दी, जंगल विच मंगल ला दित्ता,
दुःखियां दे दर्द निवारण लई, सतसंगत राह चला दित्ता

1 ऐह बाग सुहावे सोहणे विच, चंदन दा बूटा लाया है,
रूहां दे बूटे खड़सुक जो, अमृत दा पानी पाया है, x 2
ऐह सोहणा बाग सजाके ते, भुल्लयां नूं रस्ते पा दित्ता, दुःखियां दे दर्द....

2 ऐह गल्लां दा मजबून नहीं, जो करदा ऐ झोली भरदा ऐ,
इस बे–अथाह समुन्द्र विच, सच्चे नाम दा बूटा तरदा ऐ, x 2
सतसंगत दर्जा उच्चा ऐ, सच्चखंड दा भेद बता दित्ता, दुःखियां दे दर्द....

3 ओह कुल भली परिवार भला, सावन दा ना चमकाया ऐ
कृपाल जी जित्थे बैठ गए, धरती नूं भाग लगाया ऐ, x 2
सानूं भुल्ले भटके रोंदेयां नूं, फड़ सीधे रस्ते पा दित्ता, दुःखियां दे दर्द....

4 दुःखियां दा दर्द निवारण लई, जद सोहणे चक्कर लाया सी,
पहाड़ां दियां कुंदरां विच, सतनाम दा जाप कराया सी, x 2
धरती दे कोने–कोने ते, सच्चे नाम दा जाप करा दित्ता, दुःखियां दे दर्द....

5 की सिफत करां मैं सावन दी, बण आया परउपकारी ऐ,
कृपाल ने कृपा करके ते, तपदी होई दुनियां ठारी ऐ, x 2
रोंदे 'अजायब' दुःखिऐ दा, कृपाल ने दर्द मिटा दित्ता, दुःखियां दे दर्द....

महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से

अनमोल वचन

सन्त चमत्कार नहीं करते अगर वे ऐसा करें तो सारी दुनिया ही उनके पीछे लग जाए। एक सन्त के लिए किसी को आँख दे देना, बच्चा दे देना, धन–दौलत दे देना या लाईलाज बीमारी को ठीक कर देना कोई मुश्किल नहीं। क्या ऐसे लोग परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे?

दुनिया में काल का राज है, काल ने सतपुरुष से वर लिया हुआ है कि सन्त चमत्कार दिखाकर नहीं बल्कि आत्माओं से भक्ति करवाकर लाएं। सन्त सदा ही परमात्मा की आज्ञा में रहते हैं। गुरु पर यह जिम्मेदारी आती है कि जिन आत्माओं को गुरु ने नामदान दिया होता है, उन्हें गुरु शान्ति के देश सच्चखंड ले जाएं। गुरु इस दुनिया में ही नहीं बल्कि आगे की दुनिया में भी शिष्य की मदद करते हैं। गुरु का सबसे बड़ा चमत्कार मौत के समय शिष्य की संभाल करना होता है। गुरु अपने वादे के अनुसार शिष्यों को लेने के लिए आते हैं और उन्हें काल के जाल से छुड़वा कर ऊपर के मंडलों में ले जाते हैं।

आप सारी जिंदगी दुनियावी कामों में मेहनत करके धन और शोहरत प्राप्त कर लेते हैं लेकिन अंदर की महान ताकत के लिए भी सावधान हो जाएं कि वह आपके लिए क्या कर रही है। आप एक कदम गुरु की तरफ चलकर देखें, गुरु आपकी तरफ हजार कदम चलकर आते हैं। गुरु से कुछ प्राप्त करने के लिए शिष्य को गुरु के दरबार में सच्चा भिखारी बनना पड़ता है। जो गुरु मौत के समय अपने शिष्य की संभाल नहीं करते, ऐसे गुरु को दूर से ही सलाम कर देना अच्छा है।

गुरु दोनों जहान के मालिक होते हुए भी अपने आपको गरीब या दास कहकर बयान करते हैं। गुरु हमारी तरह इंसानी जामा धारण करके

हमारे बीच आकर रहते हैं, हमारी तरह खाते–पीते और सोते हैं। हम गरीब आत्माएं उस महान ताकत का अंदाजा नहीं लगा सकती। गुरु के ऊपर गरीबी–अमीरी का कोई असर नहीं होता, वह परमात्मा के भाणे रहते हैं सिर्फ गुरु ही हमें काल के जाल से छुड़ाकर सच्चे पिता के पास लेकर जा सकते हैं जिसके बाद हमारा इस दुनिया में आना–जाना खत्म हो जाता है। आप सच्चे दिल से अभ्यास करके अंदर गुरु के चरणों तक पहुँचे फिर देखें कि गुरु क्या हैं।

मौत के समय जायदाद, पत्नी, बच्चे आपके साथ नहीं जाएंगे, उस समय आपका किया हुआ भजन–अभ्यास और गुरु ही आपके काम आएंगे। हम जीवन में पिछले कर्मों का भुगतान करते हुए शारीरिक और आर्थिक कष्ट भोगते हैं यह हमारे अपने ही कर्मों का फल है। आप गुरु को याद करें गुरु आपकी अन्तर्आत्मा को मजबूत करेंगे, आपके कष्ट कम करेंगे और मन को स्थिर करेंगे। आपका गुरु के ऊपर जितना ज्यादा विश्वास बढ़ेगा उतनी ही आत्मा की गंदगी साफ होगी। जितनी जल्दी आपका लेन–देन खत्म होगा, आपकी धार्मिक चढ़ाई के लिए उतना ही अच्छा है।

पूर्ण सन्त न कोई नया धर्म बनाते हैं और न पहले के बने धर्म को तोड़ते हैं। पूर्ण सन्त अपने शिष्यों से यही कहते हैं कि आप अपने–अपने धर्म और समाज में रहें। ईसाई को सच्चा ईसाई बनना चाहिए, मुसलमान को सच्चा मुसलमान और हिन्दु को सच्चा हिन्दु बनना चाहिए। हमारी आत्मा युगों–युगों से परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। हमें परमात्मा के पास जाने के लिए अपना रास्ता ढूंढ़ना चाहिए।

परमात्मा हर इंसान के शरीर में हैं लेकिन इंसान उससे अंजान है। लकड़ी के अंदर आग है लेकिन वह उसे नहीं जलाती। हम पूर्ण गुरु की मदद से अंदर जाकर परमात्मा को शरीर में प्रकट कर सकते हैं। जब परमात्मा इस शरीर में प्रकट हो जाएंगे तब परमात्मा उसकी पूरी देख–रेख करेंगे।

काल निरंजन ने बहुत तपस्या और अभ्यास किया। उसके पिता सतपुरुष ने उसकी भक्ति से खुश होकर उसे दुनिया का कार्यभार सौंप दिया। काल कारण और प्रभाव के नियम अनुसार ही न्याय करता है।

गुरु ने आपको जो पाँच पवित्र नाम दिए हैं, आप उन्हें दोहराकर आँखों के बीच ध्यान केन्द्रित करें। ध्यान को नौं द्वारों से निकालकर आँखों के बीच तीसरे तिल पर लाना शिष्य की जिम्मेदारी है आगे आत्मा को ऊपर लेकर जाना गुरु की जिम्मेदारी है। आँखों का केन्द्र बिन्दु सीमा है, इसके ऊपर गुरु माता के रुप में खड़ा है और नीचे आत्मा बच्चे की तरह खड़ी है।

माता लगातार अपने बच्चे से कह रही है कि बच्चा सीमा पार करके उसके पास आ जाए ताकि वह उसकी देख–रेख कर सके लेकिन बच्चा समझता है कि यह काम करना मुश्किल है। माता कहती है कि जब तक तुम मेरे पास नहीं आओगे, मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती इसी तरह गुरु आशा करते हैं कि आत्मा निडर होकर मन के साथ लड़े और आँखों के केन्द्र बिन्दु तीसरे तिल पर आ जाए ताकि वह उसे आगे लेकर जा सकें।

मन काल का एजेंट है, यह हर एक के अंदर बैठा हुआ अपने मालिक का काम कर रहा है। अगर कोई आदमी सुबह जल्दी उठकर अभ्यास के लिए बैठता है तो काल अंदर से ही उसे सलाह देता है कि अभी सूर्य निकलने में बहुत देर है, क्यों न कुछ देर शरीर को आराम दे दिया जाए। फिर भी अगर वह हिम्मत करके अभ्यास में बैठ जाए तो मन अपना दफ्तर खोल लेता है, वहाँ बैठे–बैठे उसे दुनियावी कामों में उलझा देता है।

आत्मा को उलझाने के लिए काल के अलग–अलग तरीके हैं। कोई विरला हिम्मतवाला ही इसके जाल से बचकर निकल सकता है। आपको निरंतर भजन पर बैठना चाहिए चाहे कुछ भी हो मन के आगे हार न मानें। जो इस लड़ाई में सफलता प्राप्त कर लेता है, गुरु पावर उसे ईनाम के रुप में नाम का खजाना देते हैं, उसका सारे संसार में यश होता है।

जिस तरह मन अपने मालिक का काम पूरी लगन से करता है, उसी तरह शिष्य को भी अपने गुरु का काम पूरी लगन से करना चाहिए। शिष्य को अपना मुख गुरु की तरफ रखना चाहिए। हमेशा गुरु को याद करें, गुरु के बारे में सोचें, गुरु के आगे रोएं। हमने अपना सारा जीवन दुनियावी चीजों के लिए लगा दिया। आप पूर्ण विश्वास रखें कि गुरु हर समय आपके साथ हैं।

ऐसा अक्सर होता है कि जो लोग सन्तों के साथ रहते हैं, वे अहंकारी हो जाते हैं और यह भूल जाते हैं कि अभ्यास करना उनके लिए भी जरुरी है, उन्हें भी गुरु के आदेश के अनुसार जीना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि उनके अंदर गुरु को देखने की उत्सुकता कम हो जाती है।

सन्तों के साथ रहना तलवार की नोंक पर रहने के बराबर है। आप सन्तों से तभी फायदा उठा सकते हैं अगर लगातार अभ्यास करते रहें। जो प्रेमी दूर से सन्तों के पास आते हैं, वे बहुत विनम्र होते हैं। उनके अंदर सन्तों से मिलने की तड़प होती है और वे अपनी कमाई लंगर में डालते हैं। गुरु के पास रहने वाले गुरु को अनदेखा करना शुरु कर देते हैं और अपने आपको विशेष अधिकारी समझकर लंगर का खाना और आश्रम की दूसरी सुविधाएं बिना कोई पैसा दिए हुए ग्रहण करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्होंने जो अभ्यास कमाया होता है, वे उसे भी गँवा देते हैं।

भक्ति का मार्ग उनके लिए है जो अपने परिवार, नाम, शोहरत, अच्छी सेहत, सुंदरता, धर्म और अपने देश का अहंकार छोड़कर अपने अंदर नम्रता धारण कर लेते हैं। बल्ख बुखारा एक बादशाह था, उसने अपना राज्य छोड़कर बारह साल तक कबीर साहब की सेवा की। उसे जो भी रुखा–सूखा मिलता वह उसे खुशी से स्वीकार कर लेता।

अहंकार को खत्म करना पहाड़ पर चढ़ने के बराबर है। हम अपने आपको गुरु के चरणों की धूल समझकर गुरु के आगे समर्पित होकर ही

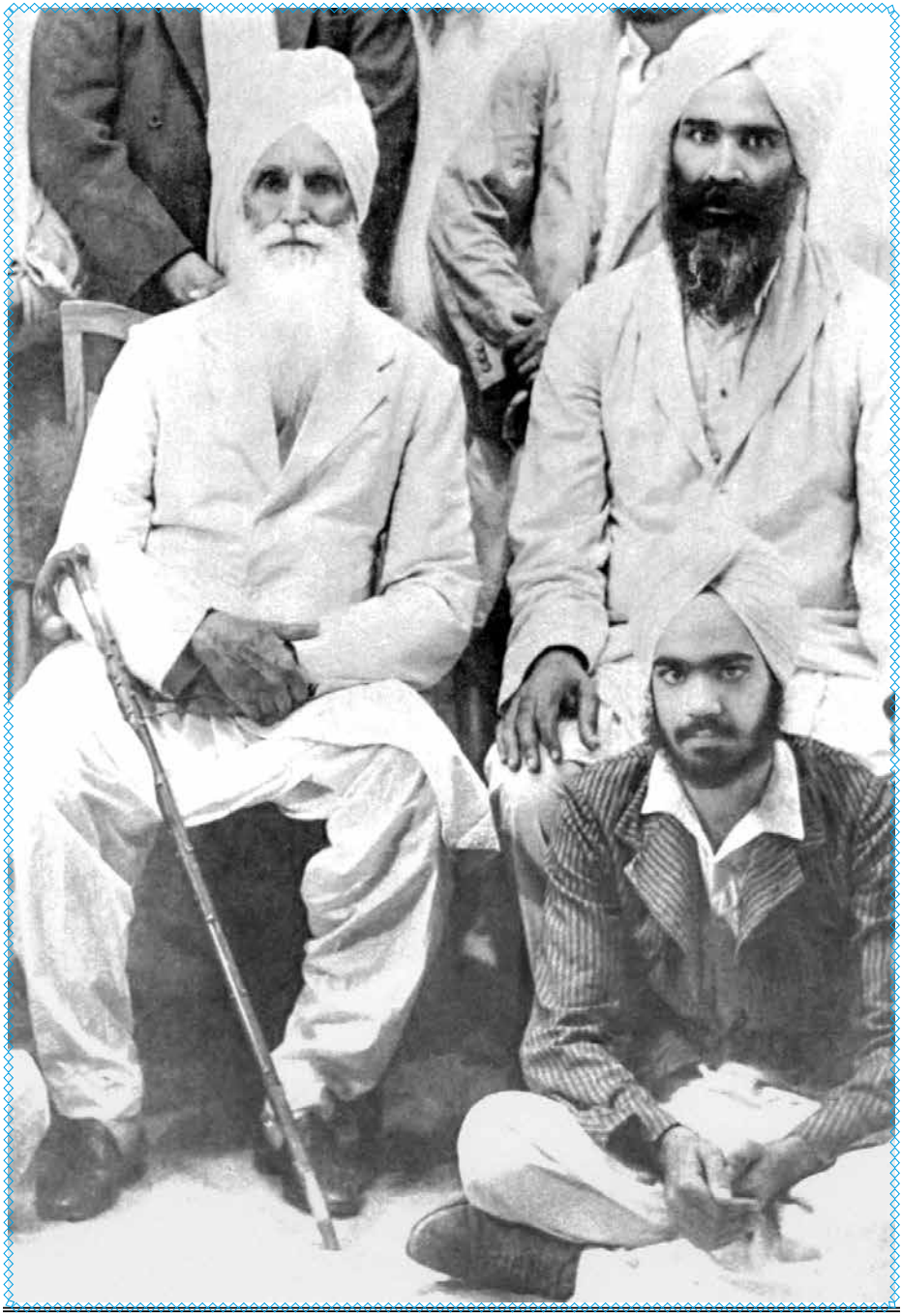

गुरु की दया के पात्र बन सकते हैं। जब शिष्य अभ्यास में बैठता है तो गुरु इस बात से अंजान नहीं होते। गुरु के पास जो कुछ होता है वह शिष्य को दे देते हैं और उसके अंदर परमात्मा के प्रति विश्वास पैदा कर देते हैं।

जिस तरह कोई भिखारी किसी अमीर आदमी के दरवाजे पर माँगने के लिए बैठ जाता है तो अमीर आदमी को पता होता है कि भिखारी मेरे दरवाजे पर बैठा है। उसी तरह परमात्मा हमारा रोना सुनते हैं, हमारी परवाह करते हैं लेकिन हम उसके प्यार को अनसुना कर देते हैं। हम अंजान हैं। हम अंदर जाकर ही देख सकते हैं कि सारा संसार उनके आदेश और उनकी देख–रेख में चल रहा है।

यह दुनिया बहुत बड़ा मायाजाल है। यह दुनिया बुरी नहीं लेकिन आप इसे अपना न समझें। यह दुनिया आपको धोखा देगी, मौत के समय आपका साथ नहीं देगी फिर भी हम इसके साथ जुड़े रहते हैं। जब हम सन्त की शरण में जाते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि यह शरीर तत्त्वों से बना है, हम इस शरीर को भी यहीं छोड़ जाएंगे। हमारी आत्मा पवित्र थी लेकिन शरीर का साथ लेकर नीचे आ गई फिर मन और इन्द्रियों का साथ लेकर दुनिया में उलझ गई और अपनी पहचान भूल गई।

आप अपने फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करके तीसरे तिल पर लाएं। सिमरन हमारे आगे के सफर का जरूरी कदम है। आमतौर पर सारी दुनिया अपने–अपने सिमरन में लगी हुई है। जैसे किसान अपने खेत व फसलों के बारे में सोचता है। दुकानदार अपने सामान और ग्राहकों के बारे में सोचता है। गृहिणी अपने घर की जरूरतों के बारे में सोचती है।

ऐसा कोई नहीं है जो सिमरन में न लगा हो। जब हम पूर्ण गुरु की शरण में जाते हैं तो गुरु हमें समझाते हैं कि आप लगातार नाम का सिमरन करें, अंदर गुरु के पास पहुँचें। सिमरन में बहुत शक्ति है। नामलेवा साहसी और हिम्मती होता है।

हमें हमेशा अपना मन गुरु की याद में लगाए रखना चाहिए। गुरु की याद हमें सुख–दु:ख से बचाएगी और परमात्मा की राह पर चलाएगी।

हर समय गुरु को याद रखें फिर देखें कि अंदरूनी शक्ति किस तरह आपकी मदद करती है। जिस तरह कोई जंगल में गुम हो जाए वह गुरु को याद करे तो अंदरूनी शक्ति उसे रास्ता दिखाती है, यह सिमरन की महानता है। आप लगातार दिन–रात, साँस–साँस के साथ सिमरन करके अपने जीवन के धार्मिक रास्ते को आसान बनाएं।

जिस तरह शीशे के जार में रखी हुई इलायची या अचार साफ नजर आता है उसी तरह जब शिष्य पूर्ण गुरु के पास जाता है तो गुरु को सब कुछ साफ दिखाई देता है लेकिन गुरु उसे जग जाहिर नहीं करते। गुरु, शिष्य को कमजोरियों से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करते हैं, उसके पापो को जानते हुए भी उसके साथ प्यार से पेश आते हैं।

जीवन में गुरु ही सब कुछ देने वाले हैं, खासतौर पर नाम की दौलत। हम नहीं जानते कि हमारी भलाई किसमें है। गुरु के पास कभी न खत्म होने वाली पूँजी है। हम हीरे–मोतियों की जगह पत्थर माँगते हैं, गुरु की दया को नहीं समझते अगर किसी की बीमारी ठीक नहीं होती या कोई कचहरी में केस हार जाता है तो हम गुरु को जिम्मेदार ठहराते हैं कि गुरु ने हमारी मदद नहीं की। जो लोग ऐसी दुनियावी चीजों की चाह में सतसंग में आते हैं, उनके लिए बेहतर होगा कि वे अपने घर में ही तशरीफ रखें।

सुख–दु:ख, गरीबी–अमीरी और जन्म–मृत्यु पहले से ही तय है, जैसा बोया है वैसा ही काटना पड़ेगा। अच्छा यही है कि हम अपना लेन–देन अपनी इच्छा से खत्म कर दें। गुरु से गुरु को ही माँगें जिसे गुरु मिल गए, उसे सब कुछ मिल गया। गुरु अपने शिष्यों से कुछ नहीं लेते लेकिन छोड़ते भी कुछ नहीं। सच्चा शिष्य दुनियावी कामों में रूचि नहीं रखता और अपनी जमीन–जायदाद को गुरु का ही समझता है। ● ● ●

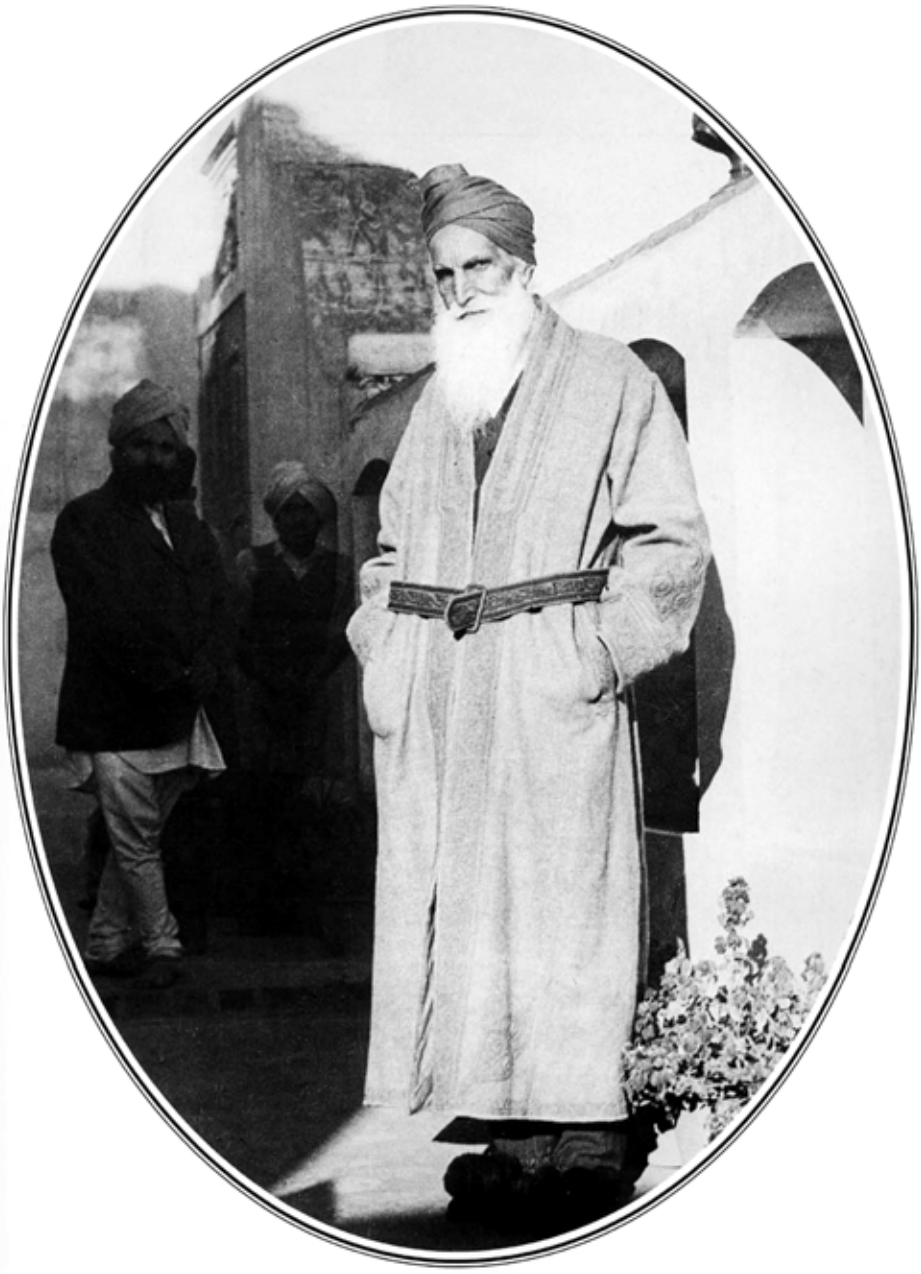

हुजूर सावन सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

हुजूर सावन सिंह जी महाराज की याद में

सच्चे गुरु की संगत आत्मा को उभार देने वाली होती है। जब आप किसी पहलवान को उसकी ताकत का आनन्द उठाते हुए देखते हैं तो कुदरती तौर पर आप भी ताकतवर बनने की कोशिश करते हैं। इसी तरह जब आपको गुरु के पास बैठने का सौभाग्य प्राप्त होता है तब आप उसके आस–पास ताकत से भरपूर निकलती हुई किरणों को पाएंगे।

मौलाना रूम कहते हैं, ''अगर ऊँचे भाग्य से आपको एक दिन का चौथा हिस्सा भी किसी प्रभु प्राप्त इंसान के चरणों में बैठने को मिले तो आपको उतना समय वह प्रेरणा मिलेगी जो सौ साल भक्ति करने से भी नहीं मिलती।'' अगर कहीं आग जल रही है तो वहाँ से गर्माइश का फायदा उठाएं। आप वहाँ से जो चार्जिंग लेते हैं वह किताबें पढ़ने से नहीं मिलती फिर उस चार्जिंग को रोजाना बढ़ाएं।

जो लोग हुजूर के चरणों में बैठे थे, वे बहुत भाग्यशाली थे। उनकी मौजूदगी में और जीवन तत्व को देखकर उन्होंने जिस परम आनन्द का अनुभव किया, वे उस आनन्द को कैसे भूल सकते हैं। हम कह सकते हैं कि यह इस तरह है जैसे चकोर चाँद को देखती रहती है लेकिन आँखें नहीं झपकती। चकोर प्यार में पीछे की तरफ इतना मुड़ती चली जाती है कि उसकी गर्दन जमीन से लगकर टूट जाती है अगर चाँद गायब हो जाए तो उसकी क्या हालत होगी?

उन लोगों को याद दिलाने के लिए यह एक उदाहरण है जिन्होंने पतंगों की तरह गुरु की मधुर संगत का आनन्द उठाया है, ऐसे आर्शीवाद का लुत्फ लिया है। जिन लोगों ने हुजूर के दर्शन किए हैं आज भी उनकी दया से लोगों को मदद मिल रही है।

हुजूर की शिक्षा क्या थी? आपकी शिक्षा बीते हुए युगों से चली आ रही शिक्षाओं के समान ही है। जब भी लोग उस शिक्षा को भूल जाते हैं तब सन्त दोबारा उस शिक्षा को ताजा करने के लिए संसार में आते हैं। आज फिर दुनिया दुखी दिलों से भरी हुई है लेकिन जहाँ जरूरत होती है वहाँ आपूर्ति आएगी। कुदरत का कानून है कि भूखे के लिए भोजन और प्यासे के लिए पानी है।

पढ़े–लिखे और अनपढ़ दोनों के लिए रूहानियत का विषय समान है। हमने इन्द्रियों, मन और बुद्धि को स्थिर करके सच्चाई को जानना है। जिसके पास जितने शब्दों का भंडार है, वह उतने शब्दों में बताएगा और विभिन्न उदाहरण देगा कि परमात्मा क्या है? कोई कैसे जान सकता है कि यह संसार कब बना, इसे किसने बनाया?

जवाब यह है कि इस संसार को परमात्मा ने बनाया है। कब और कैसे यह हम परमात्मा के पास जाकर उससे पूछ सकते हैं क्योंकि वह कर्ता है। जब हम परमात्मा के पास पहुँचेंगे तब हमारी इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और शरीर हमारे साथ नहीं होगा। महाज्ञान हमारे लिए खुल जाएगा और हमें किसी भी प्रश्न की जरूरत नहीं रहेगी।

हुजूर हमेशा यह जवाब दिया करते थे, ''आओ भाईयो, जिसने यह दुनिया बनाई है, हम उससे यह सवाल क्यों नहीं पूछते?'' सभी सन्तों ने एक समान जवाब दिया है। कबीर साहब कहते हैं, ''जब जादूगर अपनी कला दिखाता है तो हर कोई उस खेल को देखने के लिए आता है।'' परमात्मा हर समय हर जगह का कंट्रोलर है अगर हमने यह सब देखना है तो हमें उतना ऊँचा उठना पड़ेगा जितना ऊँचा परमात्मा है।

एक बार कुछ पढ़े–लिखे लोग कबीर साहब के पास इसी विषय पर चर्चा करने के लिए आए। तब कबीर साहब ने कहा, ''तुम्हारा और मेरा मन एक नहीं हो सकता। मैं वह कहता हूँ जो मैंने देखा है और तुम वह

कहते हो जो कागज पर लिखा है।'' जो इंसान सच्चाई जानना चाहता है उसे गुरु की संगत करनी चाहिए, गुरु पहले से ही सच्चाई के संपर्क में है।

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है, ''अगर आप ज्ञान की तलाश में हैं तो किसी ऐसे महात्मा के पास जाएं जो अंदर से परमात्मा के साथ एक है। जब आप परमात्मा से जुड़े हुए महात्मा के पास जाएंगे और उससे नम्रता से सवाल पूछेंगे तो आपको तसल्ली हो जाएगी। सच्चा गुरु अपनी मर्जी आप पर नहीं थोपेगा बल्कि वह हमारी समझ को तब तक विकसित करेगा जब तक वह विषय हमारी समझ में न आ जाए।''

इस मार्ग के लिए ब्रह्मचार्य जीवन बहुत जरूरी है अगर मकान की नींव मजबूत नहीं तो वह मकान कितनी देर खड़ा रहेगा? रूहानियत के लिए इसकी पहरेदारी करनी बहुत जरूरी है। वेद–शास्त्र कहते हैं कि घी की चालीस बूँदों से खून की एक बूँद बनती है और खून की चालीस बूँदों से अस्थि मज्जा की एक बूँद बनती है और अस्थि मज्जा की चालीस बूँदों से वीर्य की एक बूँद बनती है। यह कितनी कीमती वस्तु है। इसे जितना ज्यादा संभाला जाएगा उतना ज्यादा हमारा जीवन होगा।

हम जितने ज्यादा भोग करेंगे, मौत के उतने ही नजदीक बढ़ते चले जाएंगे क्योंकि एक भोग में लिप्त रहने का परिणाम कई दिनों तक हानिकारक प्रभाव देता है। ऐसे लोगों का क्या हाल होता है जो दिन–रात भोगों में व्यतीत करते हैं? उनका दिल, मन व शरीर बीमार रहते हैं अगर संसार में बीमारियाँ बढ़ रही हैं तो इसकी यही वजह है।

मेरी उम्र के लोग यह गवाही देंगे कि जब हम छोटे थे, उस समय परिवार में कोई बच्चा पैदा होता और कोई छोटा बच्चा पूछता, ''यह कहाँ से आया है?'' तो माता–पिता कहते थे कि इसे कोई लाया है। आज आप एक छोटे से बच्चे से इस विषय के बारे में पूछेंगे तो वह सब कुछ बता देगा, इसके लिए हम जिम्मेदार हैं क्योंकि हमारा पूरा जीवन गंदा है।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि हमारा जीवन मन, वचन और कर्म से पवित्र होना चाहिए। आप शायद ऐतराज करेंगे और कहेंगे, ''पारिवारिक जीवन क्या है?'' मुझे कल अमेरिका से एक पत्र मिला है, जिसमें लिखा है कि अब हम आत्मा रूप में एक पति–पत्नी हैं। शादी का मतलब जीवन में एक साथी का साथ लेना जो हमारे सुख–दुःख में साथ हो। शादी–शुदा जीवन को अगर धर्मग्रंथों के अनुसार जीया जाए तो रूहानियत के लिए कोई रूकावट नहीं। बच्चों का होना एक कर्तव्य है लेकिन आपका संपर्क तभी होना चाहिए जब आपको बच्चा चाहिए। आज तक तकरीबन जो भी सन्त आए हैं उन्होंने पारिवारिक जीवन जीया है लेकिन उनका जीवन संतुलित और उनके काबू में था।

मैं जब लाहौर में था, उस समय हुजूर को एक व्यक्ति का पत्र आया कि वह उनसे मिलना चाहता है। तब हुजूर सावन सिंह जी ने मुझे बुलाया और कहा, ''कृपाल सिंह, तुम जाकर उस व्यक्ति से मिलो।'' वह व्यक्ति शहर के दूसरे छोर पर रहता था। मैं जब उसके पास पहुँचा तो उसने कहा, ''क्या तुम्हें हुजूर ने भेजा है?'' मैंने जवाब दिया, ''हाँ।'' फिर उसने कहा ''मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मैं पहले गुरु रामदास जी के साथ था

फिर मैं दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के समय में आया लेकिन मैं अभी तक घर वापिस नहीं पहुँचा हूँ। मैं हुजूर से विनती करता हूँ कि वे जिसे भी नामदान दें, ज्योति और नाद सिद्धान्त का पूरा नामदान दें केवल सिमरन नहीं ताकि नामलेवा मेहनत करके मुक्त हो जाए।''

मनुष्य जामा बड़े भाग्य से मिलता है, उससे भी ज्यादा ऊँचे भाग्य हों तो गुरु मिलता है। गुरु पूरा नामदान देता है, इसका पूरा फायदा उठाएं।

आज हम बाबा सावन सिंह जी की याद में बैठे हैं। एक वर्ष पहले भी हम एक साथ बैठे थे। आप उस वर्ष के बारे में सोचें कि तब आप कहाँ थे और आज आप कहाँ हैं, क्या आपने कुछ तरक्की की? अगर आपने कोई तरक्की नहीं की तो अपने सबक को फिर से पढ़ें। आप गुरु के वचनों पर जितना ज्यादा अमल करेंगे उतना ही उनके नजदीक आएंगे। हुजूर सावन अक्सर कहा करते थे, ''अगर दवाई लाकर अलमारी में रख दें तो ईलाज कैसे होगा।''

नाम की ज्योति और नाद सिद्धान्त के साथ जुड़ना जीवन की रोटी और पानी है। आप जब तक अपनी आत्मा को रोटी नहीं दे देते तब तक अपने शरीर को रोटी न दें।

4 अक्टूबर 1947 को हुजूर शारीरिक रूप से बीमार हुए। आपने 12 अक्टूबर को मुझे बुलाया और मुझसे कहा ''बाकी सारी ड्यूटियाँ विभिन्न लोगों को दे दी गई हैं लेकिन अभी मैंने नामदान की ड्यूटी किसी को नहीं दी। यह ड्यूटी मैं तुम्हें देता हूँ ताकि रूहानियत का काम बढ़ता रहे।''

ये आपके शब्द हैं। नामदान का कार्य बढ़ रहा है। किसी को कहीं से भी मदद मिले तो उसे ले लेनी चाहिए। मैं सबसे प्यार करता हूँ और चाहता हूँ कि मेरे गुरु का नाम ज्यादा से ज्यादा जाना जाए और उनका काम जारी रहे। ● ● ●

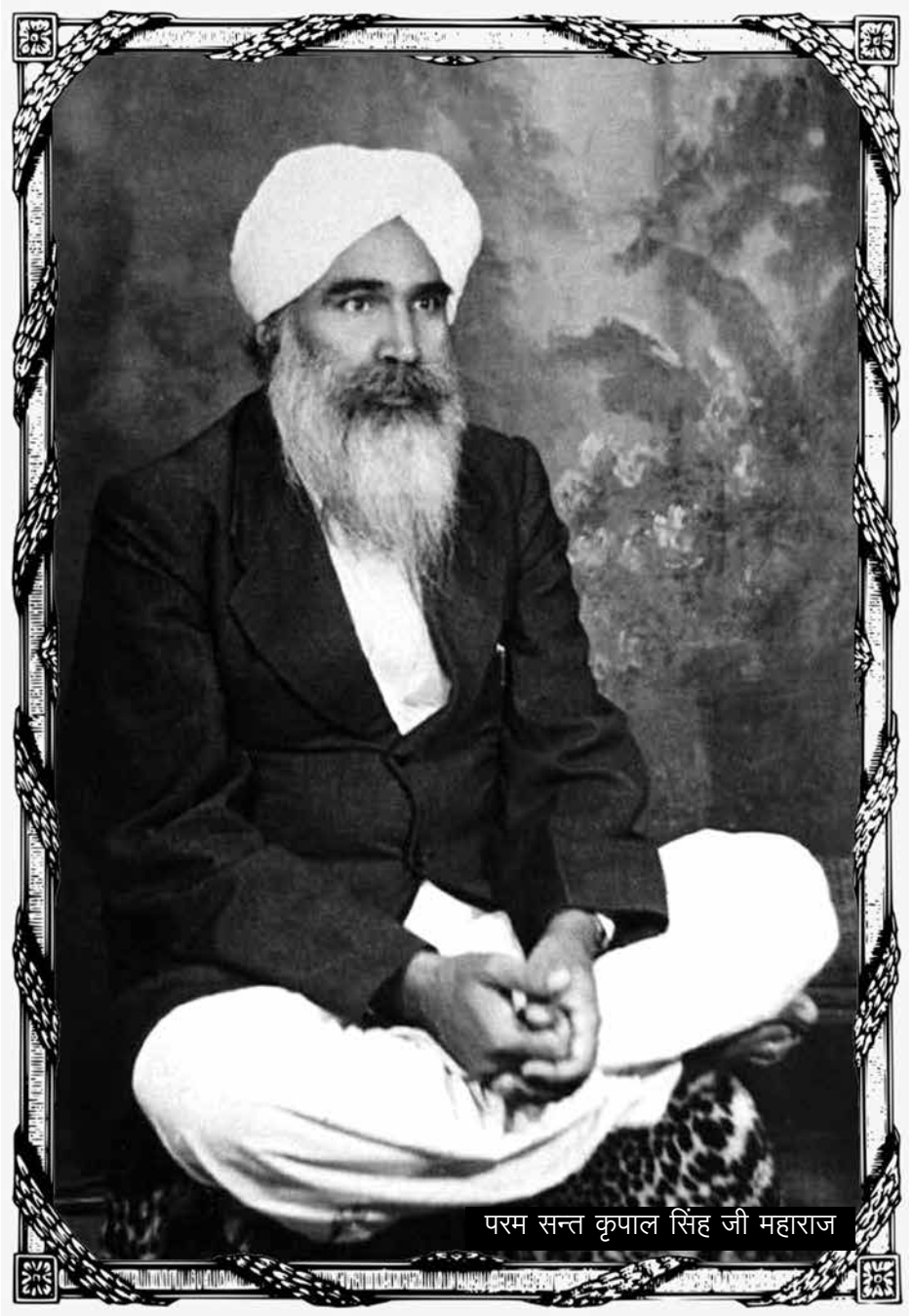

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

तवज्जो

अमेरिका

17 मई 1977

एक प्रेमी – *सन्त जी, अभी हाल ही में आपने सतगुरु की हैसियत से मिशन शुरू किया है। मुझे ऐसा लग रहा है कि हम लोग आपको बहुत दुख–तकलीफ दे रहे हैं। क्या आप हमें बिल्कुल सीधे तौर पर कहेंगे कि हम लोग क्या कर रहे हैं जिससे आपको तकलीफ हो रही है ताकि हम वह काम दोबारा न करें?*

बाबा जी – तकलीफ मानने से तकलीफ होती है लेकिन मैं इसे कोई तकलीफ नहीं मानता। प्यारे हुजूर ने मेरी जो ड्यूटी लगा दी है, मैं उनके हुक्म में ही काम कर रहा हूँ अगर मैं इसे तकलीफ समझूंगा तो इसका मतलब यह है कि मैं उनका हुक्म नहीं मान रहा। मैं उनका हुक्म मान रहा हूँ इसलिए मैं इसे बिल्कुल भी तकलीफ नहीं समझता। उन्होंने मुझे हर एक आत्मा के लिए जो काम दिया है, मैं उसे सेवा समझकर करता हूँ। आप लोग मुझे इसमें यही मदद दे सकते हैं कि आप ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करें ताकि प्यारे हुजूर हम सब पर खुश हों।

जब मैं आर्मी में सर्विस करता था तब कई लोग आर्मी में हुक्म–उदूली (हुक्म न मानना) करते थे लेकिन मैं यही कहा करता था:

नौकर की ते नखरा की।

इसी तरह मैं अब भी अपने आप पर यही तुक्क लागू करता हूँ कि मैं हुजूर का नौकर हूँ, मैं उनके सामने क्या नखरे कर सकता हूँ? मैं आप लोगों को ज्यादा से ज्यादा भजन करने की सलाह ही दे सकता हूँ।

एक प्रेमी – *सबसे पहले तो मैं आपका धन्यवाद करूंगा कि आप जब से यहाँ आए हैं तब से आपने मुझे बहुत कुछ दिया है। आपने मेरे लिए जो*

कुछ किया है, मैं उसका धन्यवाद करता हूँ। दूसरा सिमरन के बारे में मेरा सवाल यह है, क्या सिमरन के हर शब्द को पूरी तवज्जो देनी चाहिए, मेरे ख्याल से मैं लगातार सिमरन करता रहता हूँ लेकिन मैं उसके एक–एक शब्द को अपनी पूरी तवज्जो नहीं दे पाता, शायद मैं बहुत श्रद्धा और प्यार के साथ नहीं करता। इस तरह मैं आपको भी कोई तवज्जो नहीं दे पाता।

बाबा जी – अगर आप सिमरन पर तवज्जो नहीं देंगे तो आपका मन फौरन आपको सिमरन भुला देगा सिर्फ जीभ आपके मुंह में फिरती मालूम होगी। लेकिन मन जिसे आप समझा रहे होंगे, जिसे काबू करना है, वह आपके पास नहीं रहेगा। तवज्जो का मतलब है कि एक–एक सेकंड का ख्याल करना है कि हमारा सिमरन ठीक है या हमारा मन दौड़ तो नहीं रहा? तवज्जो से सिमरन करे, वही फायदेमंद है।

तवज्जो के बारे में मैं कई बार अपनी आर्मी के दिनों की कहानी सुनाया करता हूँ कि मेरा जन्म सिख परिवार में हुआ। जहां इंसान का जन्म होता है, जिस चीज को माता–पिता मानते हैं, बच्चा भी वही इख्तियार करता है। सिखों में पाँच बानियाँ पढ़ने का आम रिवाज है, यह सिखों का लॉ है अगर कोई पाँच बानियाँ न पढ़े तो वह सिख नहीं कहलवा सकता।

मुझे यह शौक था इसलिए मैं सुबह पाँच की बजाए दस–बारह बानियाँ पढ़ता था। मेरा सुबह का यह अभ्यास सात–आठ घंटे का था लेकिन इन सात–आठ घंटों में ज्यादा से ज्यादा बानी शुरू करने के पहले दस या पंद्रह मिनट ही पता चलता था। आधा जपुजी साहिब पढ़ने के बाद कुछ पता नहीं चलता था या फिर सात–आठ घंटे बाद जब आखिरी तुक्कें आती तो ख्याल आता कि बानी पढ़ रहे हैं। बीच के समय का कोई पता नहीं होता था कि कहां गए।

जब बाबा बिशन दास जी के साथ मिलाप हुआ तो उन्होंने सबसे पहले यही सवाल किया कि तुम इतनी बानी पढ़ते हो क्या तुम्हारा मन

भी कभी टिका है? फौरन दिल को चोट लगी और मैंने उन्हें बताया कि बाबा जी, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। जब बानी पढ़ते हैं तो शुरू के चार–पाँच मिनट पता रहता है या आखिरी तुक्कों पर आकर पता चलता है कि बानी पढ़ रहे हैं, बाकी के समय का कोई पता नहीं चलता।

हर एक सतसंगी को विवेक से सिमरन पर तवज्जो देनी चाहिए अगर हम तवज्जो नहीं देते तो बहुत सारे प्रेमियों को नींद आ जाती है, वे सोए रहते हैं। जब जाग आती है तो उन्हें पता नहीं होता कि वे अभ्यास पर बैठे हैं, वे इधर–उधर देखते हैं कि सारे प्रेमी तो भजन पर बैठे हैं, भजन कर रहे हैं वे बेचारे फिर आँखें बंद कर लेते हैं अगर उन्होंने पहले से ही तवज्जो के साथ सिमरन किया हो तो उन्हें पता हो कि हम तो भजन पर बैठे हैं, आँखें क्यों खोलें और अपना काम करें।

एक प्रेमी – *अगर हमारे चारों तरफ कुछ लोग निंदा कर रहे हों, गालियाँ दे रहे हों या लड़ाई कर रहे हों, अगर हम वहां सिमरन करें तो क्या हम उनसे बच जाएंगे?*

बाबा जी – हाँ, आप उनकी तरफ तवज्जो न दें। आप अपने काम में लगे रहें।

एक प्रेमी – *महाराज जी ने जो अंग्रेज़ लोगों को चिट्ठियाँ लिखी थीं, उन चिट्ठियों की* **स्पिरिचुअल एलिक्सिर** *के नाम से एक किताब बनी थी। उसमें यह लिखा है कि अगर आपको गुरु के बारे में कोई सपना आए और वह अच्छा हो तो वह भी रूहानियत के अनुभव की तरह ही होता है। क्या इसके बारे में आप और कुछ बताएँगे?*

बाबा जी: आमतौर पर हमें सतगुरु का सपना नहीं आता। जिस दिन हमारी सुरत ऊपर जाती है, हमारे ख्याल ठीक होते हैं, उस दिन हमें सतगुरु का सपना आता है। सतपुरुष सुच्चे होते हैं, वे नीचे देह में नहीं आते। उनका सपना कभी–कभी आता है और वह सच्चा होता है।

हम रोज दुनिया को मामूली–सा याद करते हैं, हमें रात को दुनिया के ही सपने उलट–पलट कर आते हैं। सतगुरु को प्यार से कितना याद करते हैं, बैठकर उनका ध्यान टिकाते हैं लेकिन उनका सपना नहीं आता। कई प्रेमियों को छह महीने, कईयों को साल तो कईयों को दो–दो साल निकल जाते हैं। पहले सतगुरु सपनों में ही आते हैं फिर जीव को तसल्ली हो जाती है। जिस दिन सतगुरु का सपना आता है, उस दिन जीव को बहुत खुशी होती है। सतगुरु हमें भजन में और कई बार सपने में चेतावनी भी दे जाते हैं।

एक प्रेमी : *मेरा सवाल प्राइवेट इंटरव्यू के बारे में है। क्या हमें अंदरूनी महाराज से ज्यादा संबंध रखना चाहिए या उन पर ज्यादा भरोसा रखना चाहिए ताकि हम आपके पास आकर अपने ज़्यादातर दुनियादारी के मामले न पूछें। मुझे ऐसा लगता है कि आप हमारे दुनियादारी के हर छोटे से छोटे सवाल का भी जवाब देते हैं लेकिन हमारे रूहानियत के सवाल कम होते हैं और दुनियादारी के ज्यादा होते हैं। मैं यह देख रहा हूँ कि आप अपनी जिंदगी का एक–एक क्षण हमारी इस तरह की बातों पर भी खर्च कर रहे हैं और मैं यह नहीं देखना चाहता कि जिस तरह महाराज जी चौदह साल पहले ही चोला छोड़ गए, उस तरह से आपको भी कुछ हो।*

बाबा जी : यह सच है कि भजन का सवाल सेकड़ों में कोई एक–आधा ही लेकर आता है, ज़्यादातर तो दुनियादारी के सवाल लेकर आते हैं जिन्हें सुनकर मैं वास्तव में ही उदास होता हूँ, इसमें कोई शक नहीं है। महाराज सावन सिंह जी भी इसी तरह कहा करते थे, ''अगर आप मेरे पास दुनियादारी के सवाल करेंगे तो मैं पहले भी जा सकता हूँ अगर आप मेरे पास भजन के सवाल करेंगे और भजन करेंगे तो मैं सौ साल तक भी रह सकता हूँ। जहां तक हो सके भजन के बारे में ही पूछने की कोशिश करनी चाहिए।''

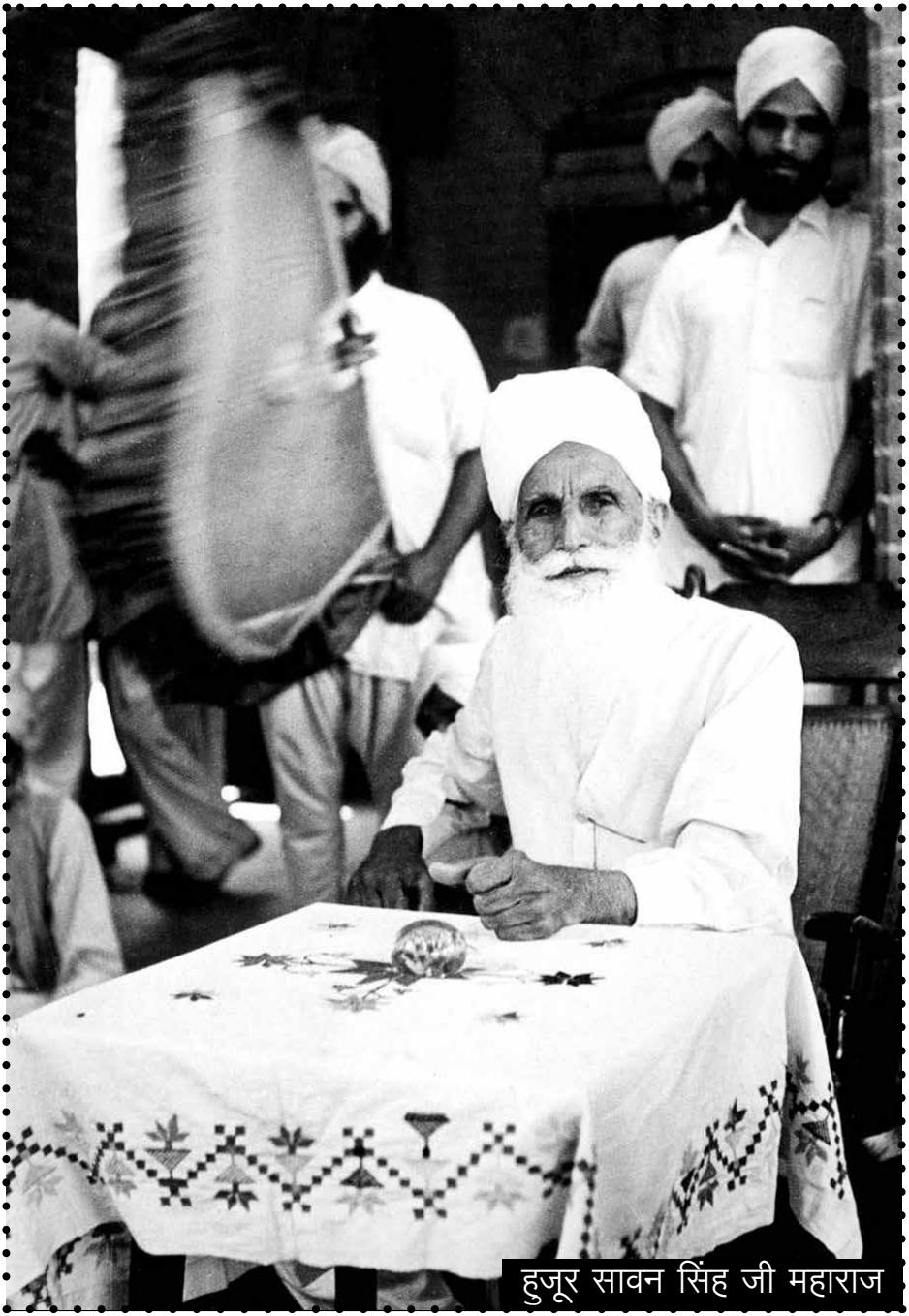

हुजूर सावन सिंह जी महाराज

मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि इंसान घरेलू मसलों का खुद जिम्मेदार होता है और उसने अपनी जिंदगी बितानी होती है इसलिए सवाल भजन का हो तो अच्छा रहता है।

एक प्रेमी : *मुझे सुबह के समय धुन बहुत तेज सुनाई देती है तो क्या मुझे सुबह का समय भजन में बिताना चाहिए और दिन के बाकी समय में भजन नहीं करना चाहिए?*

बाबा जी : हाँ, यह ठीक है।

एक प्रेमी : *मुझे यह चीज परेशान करती है कि जब मैं आपकी मौजूदगी में बैठा होता हूँ तो मुझे आपके बारे में सोचते हुए और आपको याद करते हुए बहुत खुशी होती है लेकिन मैं महाराज कृपाल का नामलेवा हूँ तो क्या यह मेरे लिए ठीक है?*

बाबा जी : यह हर एक के लिए ठीक होता है क्योंकि अग्नि एक ही है और कोई भी उसका सेक ले सकता है, अग्नि उसका शीत दूर करती है। मैं आप लोगों को महाराज कृपाल के साथ ही जोड़ने आया हूँ।

एक प्रेमी : *मुझे कई बार अभ्यास में बैठे हुए आपका चेहरा नजर आता है। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि आप मुझे बहुत प्यार और दया दे रहे हैं। क्या यह मेरे मन की कल्पना है कि मैं अंदर आपका चेहरा देखना चाहता हूँ इसलिए मुझे आप नजर आ रहे हैं या आप सचमुच ही मुझे अंदर प्यार और दया दे रहे हैं? मैं सोचता हूँ कि मुझे अंदर जोत देखनी चाहिए लेकिन मैं आपका चेहरा देख रहा हूँ।*

बाबा जी : मैं कई बार कछुए की मिसाल दिया करता हूँ कि वह पानी में रहता है और अपने अंडे खुश्क जमीन पर देता है। वह पानी में रहते हुए ध्यान से अपने अंडे पकाता है अगर वह एक सेकंड भी ध्यान वहां न रखे तो अंडों में बच्चे नहीं बनते, उनमें कीड़े पड़ जाते हैं और वे खराब हो

जाते हैं। इसी तरह सतगुरु चाहे कितनी भी दूर क्यों न हों, वे अपने शिष्य पर अपनी तवज्जो रखते हैं। उन्हें दूर–नजदीक का कोई फर्क नहीं होता। कोई वक्त ऐसा नहीं, कोई सेकंड ऐसा नहीं कि जब वे अपनी तवज्जो अपने शिष्यों में न रखें।

सन्तों की बहुत सारी संगत होती है और हर एक सतगुरु के साथ प्यार महसूस करता है। हर एक आदमी महसूस करता है कि उसके प्रति गुरु या सन्तों की ज्यादा तवज्जो है।

एक प्रेमी : *मुझे पता नहीं है कि पुराने सतसंगियों को भी यह परेशानी है या नहीं? मैं नई सतसंगी हूँ इसलिए मुझे सिमरन पर ज्यादा तवज्जो देने में परेशानी होती है। मुझे ऐसा लगता था कि नामदान के समय सिमरन के एक–एक शब्द का मतलब बताया जाएगा जिससे मैं अपनी पूरी तवज्जो उस मतलब पर भी दूँगी तो मुझे सिमरन करने में मदद मिलती जाएगी। बाद में जब मैं तरक्की करुंगी तो मतलब भूलती जाऊँगी और मेरा सिमरन लगातार होता जाएगा। मैं यही पूछना चाहती हूँ अगर मतलब का पता चले तो क्या उससे मदद मिलेगी?*

बाबा जी : आप सिमरन करें, जब आप इन स्थानों में जाएंगे तो अपने आप ही इनका मतलब पता चलता जाएगा। आप कलाकार हैं अगर कोई सिखाने वाला आपको पहले दिन ही बाजे न बजाने दे और यह कहे कि बाजा तार और लकड़ी का बनता है, इसे इस तरह बजाया जाता है तो आप किस तरह सीख सकते हैं? आपको उसके मतलब का कैसे पता चलेगा? जैसे–जैसे राग सीखते जाएंगे, हारमोनियम वगैरह सीखते जाएगें वैसे–वैसे अपने आप ही भेद खुलता जाता है कि इस सुर को दबाएँ तो इसका यह मतलब है, उस सुर को दबाएँ तो उसका वह मतलब है।

ये जो 'पाँच शब्द' बताए जाते हैं, ये उन पाँच धनियों के नाम हैं हमने जिनके पास जाना है, हमने जिनके मंडलों के बीच में से गुजरना है। इसी

तरह जब हम सिमरन करेंगे तो जिस मंडल के धनी के पास जाएंगे अपने आप उनका मतलब हल हो जाता है, बाहर इनका कोई मतलब नहीं है।

जिस तरह बाहर अमेरिका, अफ्रीका, कनाडा, इंग्लैण्ड और हिन्दुस्तान अलग–अलग मुल्क हैं, उसी तरह अंदर सूक्ष्म देश, सूक्ष्म रूप में आबाद हैं। अगर कोई हमसे यह पूछे कि अमेरिका का क्या मतलब है तो हम यही कहेंगे कि उस मुल्क का नाम अमेरिका है। जब हम अमेरिका में जाएंगे तो हम अपनी आँखों से देख लेंगे कि अमेरिका का यह मतलब है और यह एक अलग देश है।

एक प्रेमी : *भजन कितना करना चाहिए, भजन में कितना फीसदी समय देना चाहिए?*

बाबा जी : मैं तकरीबन रोज़ ही बताया करता हूँ, क्योंकि आमतौर पर कई प्रेमी नए आ जाते हैं इसलिए मैं फिर से दोहरा देता हूँ कि अगर हम एक घंटा अभ्यास में बैठते हैं तो कोशिश करें कि पंद्रह मिनट धुन सुनें। अगर आप ज्यादा वक़्त सिमरन में देते हैं तो इससे ज्यादा समय भी लगा सकते हैं, मतलब है कि सिमरन का चौथा हिस्सा शब्द सुनें।

एक प्रेमी : *कुछ बच्चे जिन्हें महाराज कृपाल सिंह जी ने धुन दी थी, उन्हें अब पूरा नाम और शब्द का भेद लेने के लिए क्या करना चाहिए?*

बाबा जी : अगर वे बारह–तेरह साल के हो गए हैं तो उन्हें नाम ले लेना चाहिए।

एक प्रेमी : *सुबह जब मैं यहाँ अभ्यास पर बैठता हूँ, आप आते हैं और लोगों को अभ्यास पर बिठाते हैं तो उसके बाद मेरा मन करता है कि मैं आँखें खोलकर आपको देखता रहूँ, अभ्यास न करूँ तो क्या यह भी मन* की कोई चालाकी है?

बाबा जी : यह मर्ज तकरीबन काफी प्रेमियों को हो जाती है कि हम आपको देखते रहें इसलिए मैं सबको कहता हूँ कि आँखें बंद करके बैठें। कोशिश करें कि एक घंटा आँखें बंद करके बैठा जाए।

एक प्रेमी : *हम एक बार महाराज कृपाल सिंह जी के पास दर्शनों के लिए गए। हमारे पास तकरीबन एक घंटे का समय था लेकिन किसी ने महाराज जी से कोई सवाल नहीं पूछा और हम लोग बिल्कुल शांति से उनके सामने बैठे रहे, वे पल बहुत ही खूबसूरत थे। जब आप यहाँ से जाने लगेंगे तो उससे पहले अगर हम थोड़ी देर के लिए बिल्कुल शांति से आपके सामने बैठें तो क्या ऐसा करना ठीक रहेगा?*

बाबा जी : यह तो आप लोगों की मर्जी है, मैं तो अपना टाईम पूरा करके जाता हूँ अगर आप सवाल करेंगे तो मैं जवाब दूंगा अगर चुपचाप बैठे रहेंगे तो आप तवज्जो हासिल कर लेंगे, इसमें भी आपका बहुत फायदा है।

ऐसी कोई बात नहीं है कि आप कोई सवाल न पूछें, उसमें भी आपका बहुत फायदा है अगर आप तवज्जो लेंगे तो आपका उससे भी ज्यादा फायदा है। मेरे बैठने का भाव इतना ही होता है कि आप दर्शन कर सकें। बहुत आदमियों के मन को तब तक चैन नहीं आता जब तक कि वे पूछताछ करके अपनी तसल्ली न कर लें। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप जो पूछना चाहें पूछ लें, मैं जवाब देकर भी खुश होता हूँ।

मैं अपने लिए यही बताया करता हूँ कि मैंने बचपन से ही अपना दिमाग खाली रखा है, कभी किसी सवाल को अपने अंदर ठहरने नहीं दिया। मैंने बचपन से कई साधन सीखे, जितना किसी ने बताया उतना करके देखा, उतना वह सही होता था। सबसे बड़ी चीज़ यह है जो सन्तों ने हमें बताया है कि सिमरन करें और धुन पकड़ें। अगर हम इतनी बात को समझ जाएँ तो यह कोई ऐसी भाषा नहीं जो हमारे समझ में नहीं आती, करना तो सिमरन है। जब हम सिमरन करेंगे तो हमारी आत्मा नौ द्वारों से

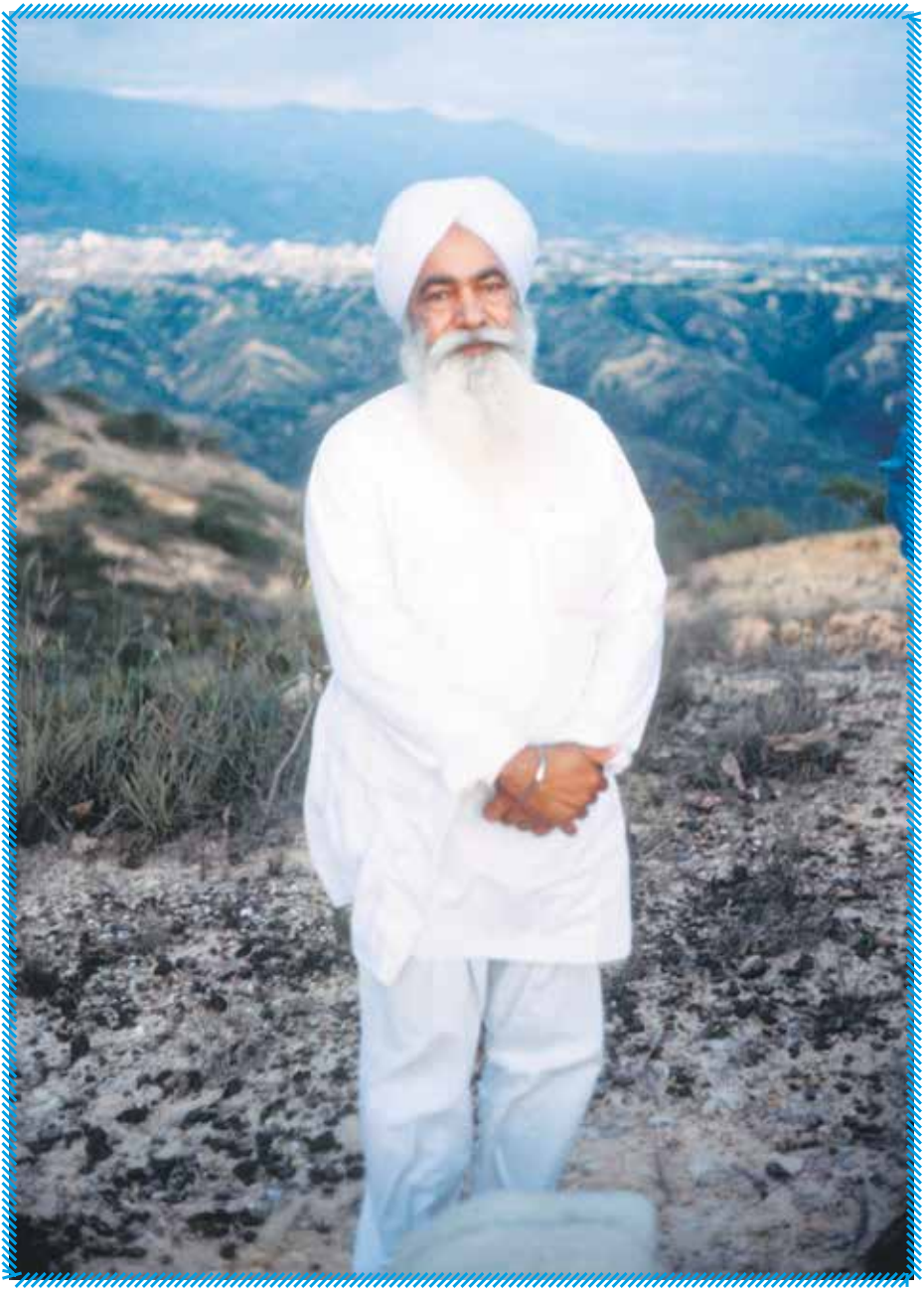

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

ऊपर उठेगी और 'शब्द' के नजदीक होगी, 'शब्द' अपने आप इसे खींच लेगा। सिमरन की कमी होने के कारण अगर 'शब्द' किसी को सुनाई भी देता है तो वह खींचता नहीं है।

एक प्रेमी : *सन् 1972 में महाराज जी यहाँ थे, तब अभ्यास के बारे में मेरे कुछ सवाल थे क्योंकि मुझे कुछ अच्छी तरह से याद नहीं कि मैं ठीक कर रही हूँ या गलत कर रही हूँ इसलिए मेरा उत्साह भी कम हो गया था। मैं जब महाराज जी के पास गई तो उन्होंने मुझसे सवाल पूछा, ''तुम अपना ध्यान कहाँ टिका रही हो, अंदर की तरफ या बाहर की तरफ?'' मैं अंदर की तरफ टिका रही थी इसलिए मैंने कहा, ''मैं अपना ध्यान अंदर की तरफ टिका रही हूँ।'' महाराज जी ने कहा ध्यान बाहर की तरफ टिकाना है। उसी से मेरी सारी चीज़ें हल हो गई क्योंकि मैं वही गलती कर रही थी।*

अगर आप एक बार अभ्यास करने के तरीके और अभ्यास के बारे में थोड़ी बहुत हिदायतें दोहरा दें कि किस तरह ध्यान टिकाना है, क्या और कैसे करना है? हम लोगों में से कई लोग ऐसे है जो भूल चुके हैं या गलत कर रहे हैं तो उन्हें पता चल जाएगा जिससे हम लोगों को बहुत मदद मिल जाएगी। जरूरी नहीं कि अभी, जब भी आपका मौका लगे।

बाबा जी : जिन्हें भजन की कोई दिक्कत या परेशानी है, वे प्राइवेट इंटरव्यू में आएँ और अपनी परेशानियाँ पूछें, मैं अच्छी तरह समझाऊंगा।

एक प्रेमी : *महाराज जी, आप कई बार जा रहे होते हैं तो कई लोग आपके सामने आते हैं। आप किसी–किसी की तो आँखों में देखते हैं और किसी की तरफ देखते भी नहीं, इसका क्या मतलब है? आप सब लोगों को* दर्शन नहीं देते?

बाबा जी : नहीं, मैं जिस टाईम जा रहा होता हूँ तो अपनी तरफ से सबको देखता हूँ लेकिन कई बार ऐसा होता है कि प्रेमी दोनों तरफ लाईन

लगा लेते हैं। आप खुद ही सोचकर देखें अगर एक तरफ देखता हूँ तो दूसरे रह जाते हैं, दूसरी तरफ देखता हूँ तो पहले रह जाते हैं। मैं एक तरफ ही देख सकता हूँ अगर सब एक तरफ खड़े हों तो यही ठीक रहता है।

एक प्रेमी : *क्या हमें दर्शनों की इच्छा रखनी ठीक है या दर्शन करने के लायक बनना चाहिए?*

बाबा जी : दोनों बातें होनी चाहिए, लायक भी बनना है और इच्छा भी रखनी है। महात्मा चतुर दास जी कहते हैं:

अट्ठो पहर तांघ दिलों रंहदी, होवे कदो जमाल सजण दा।

मेरे दिल में आठों पहर व्याकुलता रहती है, किसी भी वक्त उसका दीदार हो जाए।

***एक प्रेमी** : अगर यहाँ आपके साथ ज्यादा समय बिताया जाए तो क्या अगले साल तक के लिए हिन्दुस्तान आना जरूरी है?*

बाबा जी : नहीं, कोई जरूरी नहीं है। मैं इसके बारे में शाम के सतसंग में कबीर साहब की बानी सुनाऊँगा।

***एक प्रेमी** : कल रात बाबा सावन सिंह की फिल्म में यह देखा कि एक आदमी आया और उसने बाबा जी के चरण छूए, बाबाजी ने उसे चरण छूने दिए लेकिन जब दूसरा आदमी चरण छूने आया तो बाबा जी ने छड़ी लेकर उससे कहा, ''चलो भई।'' उसे चरण नहीं छूने दिए और बड़ी मजबूती के साथ उसे भगा दिया।*

इसी तरह मैंने दिल्ली में देखा कि कई लोग आपके चरण छूने आए तो आपने उन्हें बड़े प्यार से कहा कि ऐसा न करें लेकिन जब एक औरत आई तो आपने उसे बड़ी मजबूती से कहा, ''भई, यह न करें।'' क्या इसके पीछे कोई खास कारण है? अगर सेवक गुरु के चरण पकड़े तो क्या

उसके अभ्यास में कोई खास फायदा होता है? या कोई अपवित्र आत्मा आकर सन्तों के चरण छूए तो क्या गुरु के लिए नुकसानदायक होता है?

बाबा जी : दोनों ही बातें होती हैं। इसमें चरण स्पर्श करवाने वाले का काफी नुकसान भी है लेकिन आमतौर पर सन्त हर एक का मान रखते हैं कि चरण न छूएँ क्योंकि हमें जो कुछ भी मिलना है वह आँखों द्वारा ही मिलना है। आप देखें, काफी संगत होने के कारण चरण छूने से डिसिप्लिन भी बिगड़ जाता है।

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे कि राजस्थान में एक महात्मा नितानन्द हुए हैं। एक बार एक बहुत ही नीच कर्म वाली औरत ने उनके चरण छूए तो सारी रात उनका भजन नहीं बना। जब उन्होंने विचार किया तो पता चला कि एक नीच आत्मा आकर मेरे चरण छू गई है, जिस कारण मेरा अभ्यास नहीं बना।

आमतौर पर सन्त दुनिया को डिसिप्लिन में रखते हैं, उन्हें यह शौक नहीं होता कि कोई आकर उनके चरण छूए। अमेरिका में यह रिवाज़ नहीं है लेकिन हिन्दुस्तान में बहुत ज्यादा रिवाज़ है कि जब तक लोग चरण न छू लें तब तक वे खुश नहीं होते।

हिन्दुस्तान में भेष धारी साधू गांवों में मांगने जाते हैं और वे लोगों को तावीज–धागा भी देते हैं। उन लोगों ने हिन्दुस्तान में चरण छूने का रिवाज़ बहुत ज्यादा चलाया हुआ है। उनकी तरफ से चाहे लोग सारा दिन उनके पैरों में लेटे रहें, वे किसी से भी खुश नहीं होते। हुजूर बताया करते थे, ''अगर कुछ लेना है तो साधू की आँखों की तरफ देखें, नीचे जमीन है इसलिए पैरों को बिल्कुल भी हाथ नहीं लगाना चाहिए।''

***

किड्स कॉर्नर

साहूकार के चार बेटे

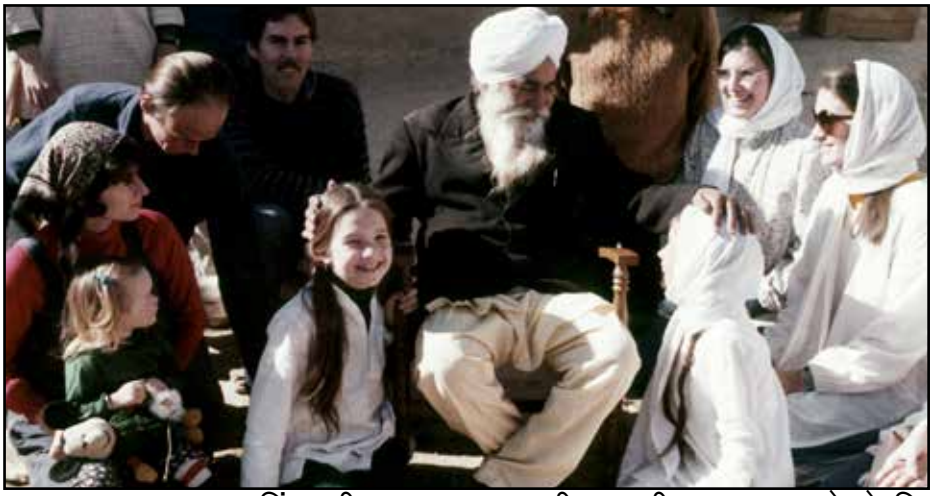

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत अच्छी कहानी सुनाया करते थे कि एक महात्मा थे, वह महात्मा सिर्फ उन्हीं के घर से खाना खाते थे जिनकी दस नाखूनों की मेहनत की कमाई होती थी।

वह महात्मा एक दिन किसी गाँव में गए। महात्मा ने गाँव वालों से पूछा कि यहाँ कोई ऐसा आदमी है जो दस नाखूनों से मेहनत की कमाई करता हो? गाँव वालों ने कहा, ''हाँ जी यहाँ एक साहूकार है जो बहुत अच्छा ईमानदारी से व्यापार करता है।'' महात्मा ने पूछा उस साहूकार के कितने लड़के हैं और उसके पास कितना धन है?

आजकल तो करंसी का बहुत फैलाव है लेकिन उस वक्त करंसी की बहुत कीमत थी। गाँव वालों ने महात्मा को बताया कि उस साहूकार के चार बेटे हैं और उसके पास चार लाख रूपये हैं। महात्मा उस साहूकार का पता पूछकर उस साहूकार के घर चले गए। साहूकार ने महात्मा का बहुत आदर सत्कार किया और उन्हें अपने पास बिठा लिया।

महात्मा ने कहा मुझे खाना खाना है। साहूकार ने कहा खाना तैयार करवा देते हैं। महात्मा वहाँ बैठ गए और बातें शुरु हुई। बातों–बातों में महात्मा ने साहूकार से पूछा, ''आपके कितने बेटे हैं और आपके पास कितना धन–पदार्थ है?'' साहूकार ने कहा, ''मेरा एक लड़का है और मेरे पास एक लाख रूपया है।''

यह सुनकर महात्मा उठकर जाने लगे तो साहूकार ने कहा, ''महात्मा जी, आपके लिए खाना तैयार हो रहा है।'' महात्मा ने कहा, ''मैं तो आपको सच्चा–सुच्चा आदमी समझकर आपके घर खाने के लिए आया था लेकिन आप तो झूठ की गठरी निकले। मैंने तो सुना था कि आपके चार लड़के हैं लेकिन आप एक बेटा बता रहे हैं क्या मैंने आपके बेटे साथ लेकर जाने हैं। मैंने तो सुना था कि आपके पास चार लाख रूपये का धन–पदार्थ है लेकिन आप एक लाख बता रहे हैं।''

साहूकार ने कहा, ''महात्मा जी, आप मेरी बात को समझ नहीं सके। मेरे तीन लड़के तो शराबी–कबाबी हैं वे कर्ज में डूबे हुए हैं मैं उन्हें अपना बेटा कैसे कह सकता हूँ। एक बेटा परमार्थ में मेरा साथ देता है मैं उसे ही कह सकता हूँ कि वह मेरा बेटा है। मैंने एक लाख रूपया परमार्थ और सेवा में लगा दिया है बाकी पता नहीं कि बिमारियों में लगना है, चोरों ने चुरा ले जाना है या मुकद्दमों की फीस में लग जाना है। मैं कैसे कह दूँ कि वह धन मेरा है।''यह सुनकर महात्मा कुछ नहीं बोले और उन्होंने चुपचाप बैठकर खाना खा लिया।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें उस अच्छे बेटे की तरह बनना चाहिए जो परमार्थ के रास्ते पर चले। हमें बुरी आदतों से दूर रहकर सेवा, भक्ति और अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। यही गुण सच्चा और अच्छा इंसान बनाते हैं।

किड्स कॉर्नर

क्या करें या क्या नहीं करें

निर्देश : वाक्य के सामने क्या करें या क्या नहीं करें लिखें।

क्रमांक	निर्देश	क्या करें या क्या नहीं करें
1.	नम्रता से बात करना	करें/नहीं करें
2.	जानवरों को कष्ट पहुँचाना	करें/नहीं करें
3.	झूठ बोलना	करें/नहीं करें
4.	सेवा के बाद प्रशंसा की इच्छा रखना	करें/नहीं करें
5.	मुस्कुराते हुए सेवा करना	करें/नहीं करें
6.	मैडिटेशन हॉल में जोर से बातें करना	करें/नहीं करें
7.	ध्यान के दौरान शांति बनाए रखना	करें/नहीं करें
8.	सतसंग हॉल की सफाई में मदद करना	करें/नहीं करें
9.	आश्रम के नियमों का पालन करना	करें/नहीं करें
10.	आश्रम में दौड़ना और चिल्लाना	करें/नहीं करें
11.	सतसंग के लिए समय पर आना	करें/नहीं करें
12.	जमीन पर कूड़ा फैंकना	करें/नहीं करें

उत्तर :

1 = करें, 2 = नहीं करें, 3 = नहीं करें, 4 = नहीं करें, 5 = करें, 6 = नहीं करें,
7 = करें, 8 = करें, 9 = करें, 10 = नहीं करें 11 = करें, 12 = नहीं करें

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जिस तरह मन अपने मालिक का काम पूरी लगन से करता है, उसी तरह शिष्य को भी अपने गुरु का काम पूरी लगन से करना चाहिए। शिष्य को अपना मुख गुरु की तरफ रखना चाहिए। हमेशा गुरु को याद करें, गुरु के बारे में सोचें, गुरु के आगे रोएं। हमने अपना सारा जीवन दुनियावी चीजों के लिए लगा दिया। आप पूर्ण विश्वास रखें कि गुरु हर समय आपके साथ हैं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926